रमज़ान को मकरूहात से बचाइए!

क्या आप जानते हैं कि रमज़ान उल मुबारक मे क्या काम नहीं करने चाहिए ? आइये जानने की कोशिश करते हैं।

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم

हुज़ूर (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) ने फरमाया: “रोज़ा इसका नाम नहीं कि खाने और पीने से बाज़ रहना हो, रोज़ा तो यह है कि लग्व और बेहूदा बातों से बचा जाए” (المستدرک للإمام حاکم), रमज़ान उल मुबारक का चाँद नज़र आते ही मोमिनो को फर्ज़ रोज़ों कि ख़ुशनुमा बहार मिल जाती है। बल्कि यूं कहें तो ग़लत न होगा कि गोया फर्ज़ रोज़े वह तोहफा हैं जो रमज़ान उल मुबारक का महिना हर साल हमारे लिए लेकर आता है। अब इस तोहफे की क़दर करना यह हमारी ज़िम्मेदारी है। बहुत से लोग बल्कि एक अच्छी ख़ासी तादाद मुसलमानों में यह सोचती है कि रोज़े का मतलब सिर्फ़ इतना है कि सुबाह से शाम तक भूके प्यासे रहो बस। हालांकि रोज़े का मतलब इस से कहीं ज़्यादा है और रोज़ा अपने आप में गोया एक इंकीलाब का नाम है। जैसा कि ऊपर ज़िक्र कि गयी हदीस मे प्यारे आक़ा (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) ने इरशाद फरमाया उसका खुलासा यह है कि रोज़े मे भूका प्यासा रहना शामिल ज़रूर है लेकिन इसी के साथ बेहूदा और फ़िज़ूल बातों से बचना भी लाज़िम है। इसी तरह एक दूसरी रिवायत मे है “जो बुरी बात कहना और उस पर अमल करना न छोड़े, तो अल्लाह ताला को इसकी कुछ हाजत नहीं कि उसने खाना पीना छोड़ दिया है।” (बुखारी) इस का मफ़हूम यह हुआ कि रोज़े मे खाना पीना छोड़ देना मगर गुनाहो पर डटे रहना यह रोज़े को मकरूह कर देता है और इस तरह रोज़ा मकरूह करना अल्लाह तबारक व ताला और उसके प्यारे रसूल (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) को हरगिज़ पसंद नहीं। यहाँ से हमें एक और ज़रूरी बात पर ग़ौर करना चाहिए कि जिन को राज़ी करने के लिए हमने रोज़ा रखा है, तो उसी रोज़े में गुनाह करके उनकी नाराज़गी मोल लेना यह कहीं की समझदारी नहीं है।

वह चीज़ें जिनसे रोज़ा मकरूह हो जाता है

झूठ, चुग़ली, गीबत, गाली देना, बेहूदा बात, किसी को तकलीफ देना यह चीज़ें वैसे भी नजाइज़ व हराम हैं रोज़े मे और ज़्यादा हराम और इनकी वजह से रोज़े मे कराहत आती है। (बहार ए शरीअत हिस्सा पंजम) यह हमारे लिए फिक्र का मक़ाम है कि अक्सर हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो रोज़े मे भी बेहूदा बात करने, झूठ, चुग़ली, गीबत, करने से बाज़ नहीं आते और अपने रोज़ों को मकरूह कर लेते हैं।

याद रहे कि रोज़ा हर उज़्व (जिस्म के हिस्से) का होना चाहिए, जहां मुँह का रोज़ा है खाने पीने से बचना वहीं ज़बान का रोज़ा है बुरी बातें, गाली गलोच, झूठ, चुग़ली, गीबत, इन सब से बचना। जहां हाथों का रोज़ा है खाने पीने और जिमा से बचना वहीं हाथों का यह भी रोज़ा है कि उसे ज़ुल्म करने से रोका जाए। और जहां जिस्म के इन सब हिस्सों का रोज़ा है वहीं आँखों का भी है और वह है हराम चीजों की तरफ नज़र करने से बचना। तो एक सच्चे मुसलमान को चाहिए कि अपने रोज़े को, अपनी इस क़ीमती इबादत को मकरूह होने से बचाए और ऊपर ज़िक्र किए गए तमाम बुरे कामों को रमज़ान उल मुबारक के इस पाक महीने मे करने से बचे और बाक़ी महीनो में भी उन्हे न करे।

रमज़ान उल मुबारक में इन आदतों से बचें

कई लोग जो घरों पर हैं और उनके पास वक़्त गुज़ारने का कोई अच्छा पेशा नहीं है, वह अक्सर वक़्त गुज़ारने के लिए तरह तरह के हीले बहाने तलाश कर लेते हैं और आराम पसंदी का यह आलम है कि इंटरनेट कि खाक छान छान कर वह ऐसे नुस्खे ढूंड लाते हैं कि जिन्हें करने से कम से कम भूक प्यास महसूस हो। मसलन, दूध मे सफ़ेद ईलाईची डाल कर पी लें पूरे दिन प्यास नहीं लगेगी, दही में फलां चीज़ डाल कर सहरी में खा लें तो पूरे दिन भूक नहीं लगेगी, अरे अल्लाह के बंदों! अगर तुम्हें ज़रा भी भूक प्यास ही नहीं लगेगी तो रोज़े का नूर तुम्हारे दिल में कैसे उतरेगा, भूका प्यासा रहना यह तो रोज़े का नूर है, इसी से बंदे के दिल का मैल छूटता है, इसी से नफ़्स को क़ाबू मे रखने में मदद मिलती है। और तक़वा और परहेज़गारी का दर्स मिलता है। इसी के साथ एक आदत यह भी देखी गयी है कि लोग तरावीह पढ़ने के बाद एक गिरोह बना कर या अकेले अकेले पूरी रात जागते रहते हैं और सहरी करके फ़जर कि नमाज़ पढ़कर ख्वाबों कि दुनिया मे ऐसे खो जाते हैं कि सीधे शाम के चार, साढ़े चार, बल्कि कुछ तो ऐन इफ्तारी से आधे घंटे पहले उठते हैं। अल्लाहु अकबर! ज़रा बताओ तो यह रोज़े की क़द्र है या नाक़द्री? न फराइज़ व वाजिबात की पाबंदी, न भूक प्यास का ज़रा भी एहसास, सिर्फ़ पूरे दिन को नींद मे गुज़ारना, क्या बईद है कि कोई ग़ैर मुस्लिम यह देख कर तुम्हारे रोज़े को महज़ फ़ाक़ाकशी से ताबीर करे मआज़अल्लाह! लिहाज़ा दोस्तों! अपने हाल पर रहम करो और अपनी इस इबादत को मकरूह होने से बचाओ। वहीं यह भी देखा गया है कि कुछ इस्लाम की शहज़ादियाँ ऐसी हैं जिनका पूरा वक़्त सिर्फ़ सोशल मीडिया पर गुज़रता है, सिर्फ़ पूरे दिन इन्स्टाग्राम और फेसबुक चलाना ही उनका अहम शग़ल है, ख़ुदारा, ऐ इस्लाम कि बेटियों! अपनी नाज़ुक जानों पर कुछ तो रहम खाओ तुम इस क़ाबिल नहीं हो कि जहन्नम कि आग

को सह सको, इसलिए फौरन तमाम गुनाहों से तौबा करो और रमज़ान उल मुबारक को अपने लिए एक नयी ज़िंदगी कि शुरूआत बनाओ।

ड्रामे और गेम्स

अल्लाह हमारे हाल पर रहम फरमाए, आज कल यह वबा इतनी आम होती जा रही है कि लोगों का पसंदीदाह मशग़ला या तो फिल्में ड्रामे देखना है या मोबाइल पर गेम्स खेल कर वक़्त ज़ाया करना। अव्वलन तो यह बात ध्यान रहे कि उन फिल्मों ड्रमों में औरतें फहश क़िस्म के लिबास पहने होती हैं और मर्द भी अपना सत्र नहीं छुपाते, फिर उनमें मौसिकी यानि म्यूज़िक कि भरमार होती है, और इसी के साथ उन्हे देख कर वक़्त कि बरबादी के सिवा कुछ नहीं मिलता। और दूसरी तरफ मोबाइल गेम्स खेलकर वक़्त गुज़ारने वालों को देखा गया है कि वह तीन तीन, चार चार बल्कि कुछ तो पाँच घंटों तक लगातार खेल में मशग़ूल रहते हैं, ऐ मेरे अज़ीज़ों अपना क़ीमती वक़्त यूं ज़ाया न करो! फरमान ए ख़ुदा सुनो!

وَ مِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّشۡتَرِیۡ لَہۡوَ الۡحَدِیۡثِ لِیُضِلَّ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ بِغَیۡرِ عِلۡمٍ ٭ۖ وَّ یَتَّخِذَہَا ہُزُوًا ؕ اُولٰٓئِکَ لَہُمۡ عَذَابٌ مُّہِیۡنٌ

“और कुछ लोग खेल कि बात ख़रीदते हैं कि अल्लाह (عزوجل) की राह से बहका दें, बे समझे और उसे हसी बना लें, उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है” (सूरह लुक़मान आयह 2)

इसी तरह वह लोग जो इन फिल्मों ड्रमों में बाद निगाही करते हैं वह यह हदीस ग़ौर से पढ़ें, हुज़ूर ए अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) ने इरशाद फ़रमाया “देखने वाले पर और उसपर जिस की तरफ़ नज़र की गई अल्लाह (عزوجل) की लानत है” (बैहक़ी), इसी के साथ जो अल्लाह तबारक व ताला के खौफ़ से इस काम से रुक जाए उसके लिए यह हसीन मुज़दा है, “जो मुसलमान किसी औरत की ख़ूबियों की तरफ पहली दफ़ा नज़र करे यानि बिला क़स्द फिर अपनी आँख मीचले, अल्लाह ताला उसके लिए ऐसी इबादत पैदा कर देगा जिस का मज़ा उसको मिलेगा”। (अहमद) लिहाज़ा अपने वक़्त को फ़िज़ूल की बातों मे गुज़ारने के बजाएं, अच्छे कामों में और इबादात में सर्फ़ करें।

रोज़े का मक़सद, फवाइद और हिकमतें

रोज़ा रखते हुए हमें यह भी जानने की ज़रूरत है कि आख़िर रोज़ा रखने का मक़सद क्या है, तभी कहीं जाकर हम उसके नूर को हासिल कर सकेंगे। अल्लाह तबारक व ताला इरशाद फ़रमाता है:

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُتِبَ عَلَیۡکُمُ الصِّیَامُ کَمَا کُتِبَ عَلَی الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِکُمۡ لَعَلَّکُمۡ تَتَّقُوۡنَ

“ऐ ईमान वालों! तुम पर रोज़े फर्ज़ किए गए जैसे अगलों पर फर्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले” (क़ुरआन सूरह बक़रह आयह 183)

यहाँ से पता चला कि रोज़े का अव्वलीन मक़सद जो क़ुरआन में ज़िक्र है वह है परहेज़गारी इख़्तियार करना, यानि अपने नफ़्स को पूरे दिन खाने पीने और जिमा से दूर रखने से बंदा दिल को गुनाहों से पाक करने कि कोशिश कर रहा है। यह वह मुजाहिदा है जो नफ़्स के साथ किया जाता है और इससे अपने आप को नफ़्स कि ख्वाहिशात को क़ाबू में रखना सिखाया जाता है। यही नहीं बल्कि इससे क़ुर्ब ए इलाही हासिल होता है और बंदा जन्नत मे ले जाने वाला अमल करता है। इसी के साथ रोज़े में बेशुमार हिकमतें मौजूद हैं, जैसे कि पूरे साल खाने को हज़म करने मे पेट, आँतें, गुर्दा, किडनी, यह सब लगे रहते हैं, साल में एक महीने के लिए उनका बोझ हल्का होता है कि दिन भर बंदा न कुछ खाता है न पीता है, तो यह सेहत के लिए अच्छा है, और इस तरह पेट से जुड़ी बीमारियाँ, मसलन गैस, क़ब्ज़, बद हज़मी, वगैरह यह सब ठीक हो जाती हैं। जापानी साइंसदाँ “योषि नोरी” ने 2016 में इस हक़ीक़त का इंकिशाफ़ किया कि अगर बंदा साल भर में तीस दिन सुबह से शाम तक भूका रहले तो उसके अंदर पनपने वाली कैंसर सेल्स ख़ुद ब ख़ुद मर जाएंगी, जिसे औटोफागी कहते हैं। पता चला कि रोज़ा रखने में कैंसर जैसे मर्ज़ का इलाज है। इनही फवाइद के साथ साथ रोज़े में एक हिकमत यह भी है कि वह लोग जो मालदार हैं, जो अहल ए सरवत हैं, वह लोग भी एक महीने के लिए भूके प्यासे रहकर उन ग़रीबों के दर्द को महसूस करें जिन के घर में खाने को कुछ नहीं है। जब ऐसा होगा तो मुआशरे में आपसी हमदर्दी बढ़ेगी और छोटे, बड़े, ग़रीब अमीर में मसावात का पैग़ाम जाएगा।

खुलासा ए कलाम

पूरी गुफ्तगू का अलहासिल यह है कि रमज़ान उल मुबारक का महीना बहुत बरकतों, रहमतों वाला है और हमें चाहिए कि इसे सही ढंग से गुज़ारें। अपने रोज़े को मकरूहात से बचाएं, झूठ, चुग़ली, गीबत, बुरी बातें कहने से परहेज़ करें। अपना वक़्त न तो सोकर और न ही फिल्में, ड्रामे और गेम्स खेल कर ज़ाया करें, गुनाहों से बचते हुए तक़वा परहेज़गारी इख्तियार करें, रोज़े के असल मक़सद को समझें, उसके फवाइद को जानें और उसकी हिकमतों पर ग़ौर करें। फराइज़ व वाजिबात की अदाएगी में लगे रहें और रब की रहमतों से मालामाल हों।

अल्लाह तबारक व तआला अपने प्यारे हबीब रहमत ए आलम ताजदार ए मदीना सरवर ए कायनात जनाब ए मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ के सदक़े में हमें रमज़ान उल मुबारक की बरकतों और उसके नूर से मालामाल फरमाये और नेकियों की तौफ़ीक़ अता फरमाये।

آمين يارب العالمين بجاه النبي الأمين عليه افضل

الصلاة و أكرم التسليم

2 रमज़ान उल मुबारक 1441ह॰ बमुताबिक़ 26 अप्रैल 2020ई॰

सग ए बारगाह ए तजुशशरीयह عليه الرحمة

फरदीन अहमद खान रज़वी

पीलीभीत शरीफ़ उ॰ प्र॰ इंडिया

अन नज्म इस्लामिक मीडिया

AN NAJM ISLAMIC MEDIA

An Najm Islamic Media is working tirelessly day in and day out to spread the true and blessed teachings of Imam Ahmad Rida Khan Qadri Barelvi (Allah is pleased with him). Which are ultimately the teachings of the Qur'an and the Beloved Prophet (may Allah bless him and grant him peace). We provide people with Islamic literature and tell to abstain from what can harm them.
An Najm Islamic Media is active on
* Facebook
* Instagram
*Youtube
*Archive.org

Reach out to us to know more :-

Feel free to call us on :
8527632019* & *9837777689